❋ 10 जून 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ **ज्ञान-**

1] तुम्हें पता है यह मनुष्य सृष्टि रूपी बेहद का झाड़ है इसमें हर एक का अपना-अपना पार्ट है। नाटक में कभी भी एक्टर्स एक-दूसरे से घृणा नहीं करेंगे। तुम जानते हो हमने इस नाटक में हीरो-हीरोइन का पार्ट बजाया। हमने जो सुख देखे, वह और कोई देख नहीं सकता। तुम्हें अथाह खुशी है कि सारे विश्व पर राज्य करने वाले हम हैं।

2] अब तुम बच्चे जानत हो- इस समय ब्रह्मा को देवता नहीं कहा जाता है। जब सम्पूर्ण बनें तब देवता कहा जाए। सम्पूर्ण बन चले जाते हैं सूक्ष्मवतन में।

3] इस समय बाप आये हैं– यह नई बात है। शिव जयन्ती भी हर वर्ष मनाई जाती है। तो जरूर वह एक बार ही आते हैं। लक्ष्मी-नारायण सतयुग में थे। इस समय नही है। तो समझना चाहिए उन्हों ने पुनर्जन्म लिया होगा। 16 कला से 12-14 कला में आये होंगे। यह तुम्हारे बिना कोई नहीं जानते। सतयुग कहा जाता है नई दुनिया को।

4] पहले सब एक की पूजा करते थे। भेदभाव की बात है नहीं। अभी तो कितना भेदभाव है। यह राम के भक्त हैं, यह कृष्ण के भक्त हैं। राम के भक्त धूप जगाते तो कृष्ण का नाक बंद कर देते हैं। ऐसी भी कुछ बातें शास्त्रों में हैं। वह कहे हमारा भगवान् बड़ा, वह कहे हमारा बड़ा, दो भगवान् समझ लेते हैं। तो रांग होने कारण सब अनराइटियस् काम ही करते हैं।

5] बाप ने तुम्हें अपना और सारे चक्र का भी परिचय दिया है, जो और कोई दे न सके इसलिए बाप कहते हैं तुम बच्चे हो स्वदर्शन चक्रधारी।

6] इतनी छोटी आत्मा, इतना बड़ा पार्ट मिला हुआ है– शरीर लेने और छोड़ने का और पार्ट बजाने का। यह बातें कोई शास्त्रों में नहीं है।

7] मुझे बुलाते ही हैं पावन दुनिया की स्थापना और पतित दुनिया का विनाश कराने आओ, इसलिए महाकाल भी कहते हैं।

8] आत्मा में ही सारा पार्ट भरा हुआ है। जो भी मनुष्य आते हैं, 84 जन्मों में कभी एक जैसे फीचर्स मिल न सकें। थोड़ी-थोड़ी चेंज होती जरूर है। तत्व भी सतो, रजो, तमो होते जाते हैं। हर जन्म के फीचर्स एक न मिले दूसरे से।

9] बाप कहते हैं तुम पतित बन गये हो फिर पावन बनना है। तुम जितना सुख देखते हो उतना और कोई नहीं देखते। तुम हीरो-हीरोइन हो, विश्व पर राज्य पाने वाले हो तो अथाह खुशी होनी चाहिए ना। भगवान् पढ़ाते हैं ! कितना रेग्युलर पढ़ना चाहिए, इतनी खुशी होनी चाहिए। बेहद का बाप हमें पढ़ाते हैं। राजयोग भी बाप ही सिखलाते हैं। कोई शरीरधारी तो सिखला न सकें। बाप ने आत्माओं को सिखलाया है, आत्मा ही धारण करती है। बाप एक बार ही आते हैं पार्ट बजाने। आत्मा ही पार्ट बजाकर एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। आत्माओं को बाप पढ़ाते हैं। देवताओं को नहीं पढ़ायेंगे। वहाँ तो देवतायें ही पढ़ायेंगे। संगमयुग पर बाप ही पढ़ाते हैं पुरूषोत्तम बनाने के लिए। तुम ही पढ़ते हो। यह संगमयुग एक ही है, जब तुम पुरूषोत्तम बनते हो। सत्य बनाने वाला, सतयुग की स्थापना करने वाला एक ही सच्चा बाबा है।

✺ 10 जून 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

[2]

✺ योग-

1] कहते हैं कल्प पहले भी समझाया था। बहुत लवली बाप है, ऐसे बाप को तो बहुत प्यार से याद करना चाहिए। तुम भी बाप के लवली बच्चे हो ना। बाप को याद करते आये हो।

✺ धारणा-

1] तुम बाप को याद करते-करते पवित्र बन जाते हो तो पवित्र राजाई मिलती है।

2] तुम बच्चों को पहले यह नशा चढ़ना चाहिए। यह ज्ञान सिवाए बाप के कोई भी ऋषि-मुनि आदि दे नहीं सकते। लौकिक गुरू तो किसको भी मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता बता नहीं सकते।

3] बाप रोज़ समझाते रहते हैं– मीठे बच्चे, बाप में कभी संशय नहीं लाओ। संशय और निश्चय– दो अक्षर हैं ना। बाप माना बाप। इसमें संशय तो हो न सके। बच्चा कह न सके कि मैं बाप को याद कर नहीं सकता हूँ।

4] लेकिन ब्राह्मण जीवन का वर्सा, प्रापर्टी सन्तुष्टता है ब्राह्मण जीवन की पर्सनालिटी प्रसन्नता है। इस अनुभव से कभी वंचित नहीं रहना।

✺ सेवा-

1] ----